विद्यार्थियों की भाषा सृजनात्मकता पर शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव का अध्ययन

कुमार विनोद

शोध छात्र, मानविकी संकाय, रामचन्द्र चन्द्रवंशी विश्वविद्यालय, पलामू, झारखण्ड

सारांश

प्रस्तुत शोध का सारांश विद्यार्थियों के परिप्रेक्ष्य में भाषा सृजनात्मकता का अध्ययन करता है। प्रस्तुत शोध एवं कार्य हेतु सर्वधर्म शोध विधि का प्रयोग किया गया है तथा शून्य परिकल्पनाओं को निर्गत किया गया है। आश्रित पर भाषा सृजनात्मकता ज्ञापन करने हेतु भाषा सृजनात्मकता परिणाम (डॉ. एस.पी.महरोत्रा एवं सुचित्रा कुमारी) का न्यादर्श सारीकृत याद्च्छिक धवन विधि द्वारा किया गया। शैक्षिक उपलब्धि के लिए चतुर्थांश गुणांक के आधार पर न्यादर्श को तीन समूहों-उच्च स्तर एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि समूहों में विभक्त किया गया। आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण में एक औसत एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि समूह की तुलना हेतु एकमार्गीय आंकडे तथा परस्पर समूहों की भाषा सृजनात्मकता की तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु ही-मान की गणना की गयी। जिसके द्वारा प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार है-शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर मात्र सृजनात्मकता के सार्थक अंतर पाया जाता है। निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों भाषा सृजनात्मकता का स्तर उच्च एवं एक औसत समूह की तुलना में निम्न है। भाषा सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध गुणांक की गणना कार्य पीर्यसन विधि द्वारा की गयी तथा भाषा सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सकारात्मक सहसंबंध पाया गया।

शब्द कुँजीभाषा : सृजनात्मकता, शैक्षिक उपलब्धि,सकारात्मक,अधिगमकता

पृष्ठभूमि :

सृजनात्मकता साहित्यकारों चित्रकारों, संगीतज्ञों इत्यादि की उपलब्धियों के रूप में देखी जा सकती है। उन्होंने अपनी सृजनशीलता से ही अपने को जगत के नक्षत्र के रूप में स्थापित किया। लेकिन जनसाधारण में भी सृजनशीलता होती है। जिसे उनकी रोजमर्रा की जिन्दगी की गतिविधि में देखा और अनुभव किया जा सकता है। उदाहरण के रूप में एक शिक्षक बच्चों को उत्कृष्ट एवं सृजनात्मक रूप से इतिहास का पाठ पढ़ाता है कि उनमें कल्पनाशक्ति एवं विषय के प्रति अभिरुचि उत्पन्न हो जाती है। एक स्त्री बहुत कम आय में अपने परिवार को सुव्यवस्थित ढंग से चलाकर घिसे-पिटे ढरे में एक नवीनतता एवं सौन्दर्य लाती है। एक माली पौधों की पहचान चुनाव और देखभाल इतनी निपुणता से करता है कि बगीचे को सौंदर्यात्मक रूप देता है। इसका तात्पर्य है कि किसी भी कार्य को करते हुए सृजनशीलता परिलक्षित हो सकती है।

सृजनात्मकता मनुष्य की सांस्कृतिक उपलब्धि है। वास्तव में संस्कृति व्यक्ति की सृजनात्मक शक्ति की अभिव्यक्ति है। किसी देश की सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, सामाजिक प्रगति इस बात पर निर्भर करती है कि देश की सृजनात्मकता का स्तर क्या है? इसी सृजनात्मक प्रयास के परिणामस्वरूप भारत अपनी जीवनाभिव्यक्ति की बहुसम्पन्नता, अपनी प्रचुर ऊर्जा, जीवन के लिए अक्षय शक्ति और उल्लास में महान माना जाता है।

जीवन की सृजनात्मक शक्ति के प्रभाव के बिना कोई महानता उत्कृष्टता और पूर्णता का प्राप्त नहीं कर सकता। शैक्सपियर, कालिदास, बाल्मिकी, सोनल मानसिंह, लतामंगेशकर, देविका रानी, इत्यादि अनगिनत व्यक्तित्व इसी प्रतिरूप के आधार पर गढ़े गए। वर्तमान समय में शिक्षा बालक बालिकाओं के सम्पूर्ण विकास के प्रयास की ओर अग्रसर हैं, जिनमें सृजनात्मकता का विकास एवं अभिन्न अंग है।

प्रत्येक क्षेत्र में सृजनात्मक चिंतन के उस क्षेत्र को समग्रता प्रदान करता है; जैसे चित्रकार, संगीतज्ञ, साहित्यकार वैज्ञानिक सभी अपने क्षेत्र में सृजनशीलता के द्वारा ही

अपना योगदान देने में समर्थ हुए है। प्रत्येक क्षेत्र में सृजनशीलता का विकास महत्वपूर्ण है। इसी संदर्भ में भाषा सृजनात्मकता संस्कृति और सभ्यता से सीधे रूप में जुड़ी है। भाषा का उद्‌भव और लिपि का जन्म सृजनात्मकता का ही परिणाम है और भाषा ही व्यक्ति में कल्पनाशक्ति और सृजनात्मकता का विकास करती है। भाषा विकास के संदर्भ में डॉ. जाकिर हुसैन ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि, "मुझे इसमे शक नहीं कि युवकों को पूर्णरूपेण कुशल बनाने के लिए मातृभाषा ही अपना काम कर सकती है। भाषा मानव मस्तिष्क की विकास के लिये उतना ही स्वाभाविक है जितना बालक के शारीरिक विकास के लिए माँ का दूध आवश्यक है।"

शोधार्थी द्वारा भाषा सृजनात्मकता के संदर्भ में पूर्व शोध अध्ययन को देखा गया जो इस प्रकार है :-

टी.टनवी (2011) में भाषा सृजनात्मकता तथा सृजनात्मक लेखन क्रियाओं पर शोध कार्य किया। यह अध्ययन यह सुझाव देता है कि अधिगमकर्ता की भाषा सृजनात्मकता के लिए परिस्थितियों को उत्पन्न करने की आवश्यकता है। उन्हें स्वयं प्रत्यक्ष रूप से नए विचार निर्मित करने हेतु अवसर की आवश्यकता होती है।

शहीन एलवान, डोगर यादीगर एवं तनेर डरगन गेशल (2012) ने सृजनात्मकता एवं मैटाफोरिकल प्रत्यक्षीकरण पर पूर्व विद्यालय एवं प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का सृजनात्मकता के विषय में अभिमत का अध्ययन किया जिसमें 193 विद्यालय पूर्व एवं प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों से प्रदत्त संकलन किया। इस शोध के निष्कर्ष यह रहा कि शिक्षक, चिंतन कौशल नवाचार को सृजनात्मक व्यक्ति की विशेषता के रूप में देखते हैं और उनका मानना है कि हर व्यक्ति सृजनात्मकता को प्रदर्शित नहीं कर सकता, लेकिन यह सीखी जा सकती है तथा इसमें उतरोत्तर सुधार किया जा सकता है।

मेविन, जीने एवं स्वान, जोन (2007) ने भाषा में प्रत्येक दिन सृजनात्मकता विषय पर अध्ययन किया। इनके द्वारा किए जाने वाले वर्तमान कार्य की जांच से कार्य शुरू किया जो यह तर्क प्रस्तुत करते हैं कि सृजनात्मकता ने केवल विशिष्ट एवं प्रतिभावशाली भाषा उपयोगकर्ताओं की विशेषता है बल्कि यह दिन प्रतिदिन के कार्य एवं अभ्यास में भी परिलक्षित होती है।

चेयुग, वाई मिंग, में शेक काम, दसाग, हेक्टर डब्ल्यू एस (2003) द्वारा हाँगकाँग के प्राथमिक विद्यालय के बालकों की सृजनात्मक लेखन कौशल शिक्षण का अध्ययन किया जिसके लिए 499 चाइनीज भाषा शिक्षकों को न्यादर्श में सम्मिलित किया। शिक्षकों ने यह माना कि सृजनात्मकता के लिए मुक्त वातावरण प्रदान करने एवं आत्मविश्वास विकसित करने की आवश्यकता है, लेकिन सभी परंपरागत तरीकों से ही लेखन शिक्षण कर रहे हैं।

ब्रैहले फिनवार ने सृजनात्मकता रू डज प्लेस मैटर? विषय पर शोध किया। यह शोध यह तर्क प्रस्तुत करता है कि यदि अधिगम वातावरण का समुदाय में गहरें अर्थो में निर्मित किया जाये तो सृजनात्मकता को बहुत अधिक विकसित किया जा सकता है। शिक्षा जिसकी जड़ों में कला स्थित हो, नवाचार आधारित देश के लिए परिस्थितियों प्रदान करता है।

डिक्सी, अयान (2012) ने टर्किश छात्र अध्यापकों के सृजनात्मकता के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन किया। इस शोध का उद्देश्य सृजनात्मकता के संदर्भ में टर्किश छात्र अध्यापकों की व्यक्तिगत अभिमत को निर्धारण करना था। इस उद्देश्य हेतु छात्र अध्यापकों के लिंग, पृष्ठभूमि, सामाजिक आर्थिक स्तर सृजनात्मकता की जांच के संदर्भ में उनकी व्यक्तिगत अभिमत के बनने में सार्थक अवसर उत्पन्न करते हैं।

गुलेन एवं बमंजो (2011) में भाषा के लिए सृजनात्मक लेखन, विषयवस्तु एवं साक्षरता शिक्षण पर शोध कार्य किया। यह शोधपत्र अधिगमकता की सृजनात्मकता को उत्प्रेरित करने के लिए अंग्रेजी में शिक्षण विज्ञान, जो भाषा विषयवस्तु एवं साक्षरता को प्रोत्साहित करता है, पर आधारित है। सृजनात्मकता को प्रारम्भ करने का आरंभ बिन्दु संगीत एवं कला है। संगीत एवं कला तथा भाषा का स्वाभाविक संबंध पाया जाता है। कहानियाँ शिक्षण अधिगम का उत्कृष्ट साधन है क्योंकि इनमें सभी तत्व होते हैं, जिससे सीखने वाले को लाभ होता है। इस अध्ययन में अधिगमकर्ता संगीत सुनने से शब्द तथा वाक्यों के स्तर पर, अंत में अंग्रेजी भाषा में अपनी कहानियाँ सुनाने तक सीखते हैं। जो कहानी अधिगमकर्ता सृजित करते हैं वो भाषा आत्मसातीकरण एवं साक्षरता विकास का महत्वपूर्ण साधन सिद्ध हुआ है।

डी.सी. क्रिस्टी (2002) ने सृजनात्मकता एवं कल्पनाशीलता के संदर्भ में अंग्रेजी-एज-सैकण्ड लैग्वेज विद्यार्थी की वृद्धि पर कार्य किया। अंग्रेजी एज सैकण्ड

लैग्वेज शिक्षकों का मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति के सृजनात्मकता एवं कल्पनाशीलता होती है तथा शिक्षक की भूमिका उन गुणों का पोषण करना है। वह नवाचार एवं खोजने वाले चिंतन को उपलब्ध करने के लिए मुक्त प्रश्न करते हैं तथा विद्यार्थियों को अपनी अनोखी सूझ एवं चिंतन के लिए अभिप्रेरित करते हैं।

फरानडो, प्रीटो एवं फर्नाडेज स्नेज, (2005) ने बुद्धि एवं सृजनात्मकता के मध्य संबंध पर अध्ययन किया। निष्कर्ष यह बताते हैं कि दोनों के मध्य सहसंबंध निम्न होता है यद्यपि उनके मध्य संबंध बुद्धि की रचना की सम्प्रत्यात्मकता के अनुसार परिवर्तित होता है। सामान्यतया हम कह सकते हैं कि दोनों के मध्य गहरा संबंध पाया जाता है लेकिन अधिक फल वाले विद्यार्थी सृजनात्मक हो यह जरूरी नहीं है।

बेगरिक रूपोर्ट (2005) ने कहा कक्ष संवाद में सृजनात्मकता एवं कारणों का अध्ययन किया। यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि सृजनात्मकता को बढ़ाने के लिए संवाद कारणों को अधिक विस्तार से समझने की आवश्यकता है तथा शिक्षा के परिप्रेक्ष में सृजनात्मकता के उत्प्रेरित एवं सही दिशा में बढ़ाने के लिए संवाद मॉडल को विकसित किया जाना चाहिए।

स्कैटर जॉन, थम् यो मैग एवं जाफकिन, डेविड (2006) द्वारा सृजनात्मक शिक्षण एवं प्रारम्भिक विद्यालयों की उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन किया गया। इस अध्ययन में 48 उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों का कक्षा कक्ष अनुदेशन का निरीक्षण एवं मूल्याकन 8 पाठों के द्वारा पूरे वर्ष में किया गया। प्रत्येक पाठ के लिए सृजनात्मक शिक्षण आवृत्ति अंक तथा गुणात्मक अंकों को प्राप्त किया गया जिसके आधार पर यह निष्कर्ष निकाला कि अधिकतर शिक्षक सृजनात्मकता के विकास के लिए शिक्षण में कोई तरीका नहीं अपनाते हैं। निम्न निष्पत्ति विद्यार्थी तथा अल्पसंख्यकों की उच्च अनुपातता से युक्त कक्षा निम्न सृजनात्मकता शिक्षण प्राप्त करते हैं।

गिलेन जूलिना (2007) डरवेन्टनडोर : क्रियेटिव एक्ट शोध कार्य में यह स्पष्ट किया कि बच्चे को प्रत्येक शब्द का सामान्यतया सृजनात्मक जो वाद के जीवन में सौदर्यात्मक स्वरूप में लिया जाता है, स्वीकार नहीं किया जाता है। लेकिन प्रारम्भ शब्द सीखना शब्द अर्थ के लिए सृजनात्मक प्रतिक्रिया है।

उपरोक्त अध्ययनों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भाषा सृजनात्मकता का विकास आवश्यक है। अतः शोधार्थी द्वारा उक्त चर का चुनाव शोधकार्य हेतु उपयुक्त है। तथा विद्यालय शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका उसके विकास में है। अतः स्वतन्त्र चर शैक्षिक उपलब्धि का चुनाव भाषा सृजनात्मकता के संदर्भ में उपयुक्त हैं।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं।

1. शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर विद्यार्थियों की भाषा सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शैक्षिक उपलब्धि के स्तरों का भाषा सृजनात्मकता के साथ सह संबंध का अध्ययन करना।

परिकल्पनायें

प्रस्तुत शोध की परिकल्पनाएँ इस प्रकार है -

1. उच्च, औसत एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की भाषा सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नहीं है।
2. उच्च शैक्षिक उपलब्धि एवं औसत शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की भाषा सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नहीं है।
3. उच्च शैक्षिक उपलब्धि एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की भाषा सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नहीं है।
4. औसत शैक्षिक उपलब्धि एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की भाषा सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नहीं है।
5. शैक्षिक उपलब्धि का भाषा सृजनात्मकता पर सार्थक नहीं होता है।

परिसीमांकनः

प्रस्तुत शोध कार्य राजस्थान राज्य के जयपुर जिले में सम्पन्न किया गया है।

- इसमें माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम में अध्ययनरत विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।
- प्रस्तुत शोधकार्य भाषा सृजनात्मकता की संभावनाओं तक सीमित है।

शोध विधि

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत कार्य हेतु विवरणात्मक सर्वेक्षण

विधि का चयन किया गया जिसमें स्थिर समूह तुलना डिजाइन का उपयोग किया गया।

समष्टि एवं न्यादर्श

प्रस्तुत शोध हेतु जनसंख्या माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम में अध्ययनरत विद्यार्थी है जिसमें जयपुर जिले को चार भौगोलिक परिस्थितियों (उत्तर दक्षिण पूर्व पश्चिम) के अनुसार विभक्त कर प्रत्येक से दो विद्यालयों का चयन किया गया। कुल आठ विद्यालयों से (60 बालक और 60 बालिकाओं) कुल 120 छात्रों का चयन यादृच्छिक चयन विधि द्वारा किया गया।

चर : प्रस्तुत शोध विद्यार्थियों की भाषा सृजनात्मकता पर शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव का अध्ययन करना है। जिसमें भाषा सृजनात्मकता आश्रित चर है तथा शैक्षिक उपलब्धि स्वतंत्र चर है।

उपकरण

दो चरो का मापन करने हेतु प्रयुक्त उपकरणों का विवरण इस प्रकार है-

1. भाषा सृजनात्मकता परीक्षण रु डॉ. एस.पी महरोत्रा एवं सुचेता कुमारी द्वारा निर्मित का उपायोग भाषा सृजनात्मकता के परीक्षण के लिये किया गया।

2. परीक्षण का विश्वसनीयता गुणांक पुनपरीक्षण विधि के द्वारा 0.91 तथा अर्धविच्छेदन विधि द्वारा 0.88 है तथा वैधता गुणाक 0.82 है।

परीक्षण में पाँच उपपरीक्षण सम्मिलित है-

(1) कथावस्तु का निर्माण (2) संवाद लेखन (3) कविता निर्माण (4) वर्णनात्मक शैली (5) शब्दावली निर्माण। सभी उपपरीक्षणों की प्रकृति शाब्दिक है परीक्षण में कुल 27 पद है। निर्धारित समय 2 घंटे 27 मिनट है तथा अंकन प्रक्रिया में चार तत्वों को शामिल किया गया है।

(1) प्रवाह (2) लचकता

(3) मौलिकता (4)विस्तार

3. शैक्षिक उपलब्धि के मापन हेतु आठवीं कक्षा वार्षिक अंको को सम्मिलित किया गया है।

समूहों का निर्माण

प्रस्तुत शोध में स्वतंत्र चर के आधार पर समूहों का निर्माण किया गया। सम्पूर्ण न्यादर्श को तीन समूहों में, उच्च, औसत एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि समूह, विभक्त करने के लिए चतुर्थांश गुणांक की गणना की गयी चतुर्थाशं गुणांक के अंतर्गत आनेवाले विद्यार्थियों को निम्न शैक्षिक उपलब्धि फ 25 से फ 75 तक आनेवाले विद्यार्थियों को औसत एवं फ 75 से ऊपर आनेवाले विद्यार्थियों को उच्च शैक्षिक उपलब्धि समूह में रखा गया।

तालिका-1

भाषा की सृजनात्मकता की तुलना हेतु T का मान

समूह	N= 60	DF	माध्यमान Mean	मानक SD	विचलन	SEDM	t value	सार्थकता स्तर
उच्च शैक्षिक उपलब्धि समूह	30	58	176.03	67.16		17.188	5.88	0.01 तालिका
निम्न शैक्षिक उपलिब्ध समूह	30		75.27	65.94				मूल्य

तालिका-2

भाषा की सृजनात्मकता की तुलना हेतु T का मान

समूह	N	माध्यमान Mean	मानक विचलन SD	SEDM	DF	t value	सार्थकता स्तर
उच्च शैक्षिक उपलब्धि समूह	30	176.03	67.16	15.111	88	2.31	0.01पर t=2.63
निम्न शैक्षिक उपलब्धि समूह	30	140.98	68.42	65.94			तालिका मूल्य

निष्कर्ष:

प्रस्तुत शोध कार्य में प्राप्त परिणाम के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि भाषा सृजनात्मकता पर शैक्षिक उपलब्धि के स्तर गहन रूप से संबंधित है। उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों में भाषा का विकास एवं सृजनात्मकता औसत एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की तुलना में उच्च पायी जाती है। विभिन्न अध्ययनों से ज्ञात होता है कि सृजनात्मकता एवं वृद्धि में सहसंबंध निम्न स्तर का पाया जाता है, लेकिन फरानडो प्रीतो एवं फर्नाडेज (2005) द्वारा किए गए शोध अध्ययन से यह स्पष्ट होता है यह संबंध वृद्धि की रचना की सम्प्रत्यात्मकता के अनुसार परिवर्तित होता है तथा गिलफॉर्ड के बहुतत्वीय सिद्धान्त एवं गार्डनर के बहुबुद्धीय सिद्धान्त में सृजनात्मकता को सम्मिलित किया गया है। अत: उच्च शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों में भाषा सृजनात्मकता का स्तर अन्य की तुलना में उच्च है। इसी प्रकार औसत शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों का भाषा सृजनात्मकता का स्तर निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की तुलना में उच्च पाया जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि शैक्षिक उपलब्धि, भाषा सृजनात्मकता परस्पर संबंद्ध है तथा शैक्षिक उपलब्धि एवं भाषा सृजनात्मकता के मध्य सहसंबंध सार्थक एवं धनात्मक है, यह दर्शाता है कि भाषा सृजनात्मकता और उपलब्धि स्तर एक दूसरे पर आश्रित है।

शैक्षिक निहितार्थ :

प्रस्तुत शोध का शैक्षिक उपलब्धि और भाषा सृजनात्मकता के मध्य परस्पर निर्भरता है अत: भाषा शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों में भाषा विकास के साथ सृजनात्मकता के पक्ष पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। किश्ट्री (2002) स्कैटर यल डेविड (2006) रूपट (2005) चेयुंग सेक हेक्टर (2003) टनबी (2011) द्वारा अपने शोध निष्कर्षो से यह स्पष्ट किया है कि सृजनात्मकता के विकास के लिए वातावरण एवं शिक्षक के प्रयास अत्यंत आवश्यक है। उनके द्वारा प्रदान किए जाने वाले उत्प्रेरण, अभिप्रेरण एवं वातावरण बालक में सृजनशीलता का विकास करते है। यद्यपि निम्न शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों में भाषा सृजनात्मकता का स्तर उच्च एवं औसत की तुलना में निम्न है लेकिन मेबिन जीनत एवं जोन (2007) द्वारा शोध के निष्कर्ष यह स्पष्ट करते है कि तुलनात्मक रूप से भाषा सृजनात्मकता का स्तर उच्च एवं निम्न हो सकता है, लेकिन दिन प्रतिदिन के कार्यो एवं साधारण कार्यो में भी सृजनात्मकता निहित होती है। गिलेन, जूलिया (2007) का शोध भाषा सृजनात्मकता के विकास की दृष्टि से मील का पत्थर है जो बच्चों के प्रत्येक प्रारम्भिक शब्द उच्चरण को भाषा सृजनात्मकता की विकास की सीढ़ी के रूप में सिद्ध करता है उनके शोध का निष्कर्ष है कि प्रारंभिक शब्द सीखना, भाषा सृजनात्मकता के विकास की प्रतिक्रिया है। अत: शिक्षण अधिगम प्रक्रिया द्वारा विद्यार्थियों में भाषा सृजनात्मकता का विकास करने का प्रयास शिक्षकों द्वारा किया जाना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. वर्मा रामपाल सिहं 1998ए मनोविज्ञान के सम्प्रदाय, विोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
2. विगन, मार्क, थींकिग भिजुयली, ए.वी.ए. पब्लिशर्स, स्िअरजरलैझड।
3. कौशिक, एस. एच. 1977, शिक्षा क्रम विकास, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
4. Bradley, Finbarr, (2012), Creativity : Does Place Matter? Routledge- Taylor-Francis, Ltd Philadelphia. London Review of Education, V.10, N.2 p.145-157
5. De Ceasare, Christie (2002). Creativity and Imagination : Nourishing Growth in ESL Students Active Learner. A Foxfire Journal for Teachers. V.7 N.1, p-5-10.